# उपसंहार

## उपसंहार

यशपाल जैसे समर्थ साहित्यकार ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा से न केवल परम्परांगत मार्ग को प्रशस्त किया, बल्कि उनका कार्य हिन्दी साहित्य के लिए एक नवीन दिशा ज्ञान का द्योतक है। कलम से हो या तलवार से, साहित्य के हर क्षेत्र में बड़े ही संघर्ष और साहस से साहित्य क्षेत्र में साहित्य के रूप में व्यक्त किया है।

आधुनिक साहित्यकारों की जिस श्रेणी में यशपाल की गणना की जाती है, वह श्रेणी प्रगतिशील साहित्यकारों की है। यशपाल में सभी गुण मौजुद थे, यदि यशपाल को समस्यामूलक कथाकार कहा जाये तो अनुपयुक्त नहीं होगा। सामाजिक और राजनीतिक अवस्थाओं में परिवर्तन के साथ-साथ व्यक्ति की मान्यताओं ,विचारों और भावनाओं में भी परिवर्तन होना आवश्यक है। परिवर्तन की यह गति ही विकास अथवा प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करती है।

यशपाल की जीवन दृष्टि मार्क्सवादी चिन्तन से प्रभावित है, उस पर वैज्ञानिक समाजवाद की छाप है।

जिस प्रकार व्यक्तियों के जीवन के ढंग, उनका अनुभव और ज्ञान बदलता जाता है उसीप्रकार उनके विचार और कल्पना के रूप और सीमायें भी बदलती जाती है।

यशपाल के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। आधुनिक साहित्यकारों की जिस श्रेणी में यशपाल की गणना की जाती है,वह श्रेणी प्रगतिशील साहित्यकारों की है।

परिस्थितियोंद्वारा पीडित नारी की समस्या का चित्रण करके प्रस्तुत उपन्यास का अन्त जिस रूप से किया है वह लेखक की समर्थ लेखनी का परिचायक ही है। संक्षेप में हम यह कह सकते है कि यशपाल ने नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को बडी सूक्ष्मता से उजागर किया है।

यशपाल ने साहित्य के लिए विचार प्रतिपादन को महत्व दिया है। समस्याओं का भी उन्होंने निकट से अध्ययन किया है,इसीलिए उनकी कृती में उनके पात्र भी उनकी विशिष्ट दृष्टिसे परिचलित है। समय की परिवर्तित गति के अनुसार आदर्शों के मानदण्ड में भी अन्तर होना अनिवार्य है। जिस प्रकार व्यक्तियों के जीवन के ढंग, उनका अनुभव और ज्ञान बदलता जाता है,उसी प्रकार उनके विचार और कल्पनाशक्ति भी बदलती रहती है।

'मनुष्य के रूप' उपन्यास में सोमा के माध्यम से एक विधवा और अबला जीवन की दयनीयस्थिति का खाका मिलता है,तो दूसरी ओर विषम परिस्थितियों से टक्कर लेने की प्रेरणा भी मिलती है। सोमा की इन मजबूरीयोंको अनदेखा कर प्रतिष्ठित समाज मन चाहे ढंग से उपयोग करता है और फिर एक दिन उस पर कीचड उछाल कर उसे अँधेरे गर्त में धकेल देता है। उसके बाद सोमा पर क्या बीतती है, वह किस प्रकार परिस्थितियों से जूझती हुई एक नयी दुनिया में पहुँच जाती है, उसकी इसमें आत्मनिर्भरता प्रस्तुत होती है। धनसिंह भी बेबस और लाचार है। सोमा और धनसिंह दोनों अपराजेय योध्दा की भाँती जीवनभर संघर्ष करते रहें, किन्तु अपने संघर्ष को सार्थक विद्रोह में नहीं बदल पाते।

यशपाल जी ने उपन्यास में दार्शनिक धरातल पर भौतिक परिवेश में परिवर्तन के फलस्वरुप चेतना में होनेवाले परिवर्तन को अंकित किया है। 'अनुकूल परिस्थितियाँ जहाँ व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकती है, वहाँ प्रतिकूल वातावरण उसे पतन के गर्त में धकेल सकता है।

भाषा शैली के आधारपर यशपाल के उपन्यास का मूल्यांकन करने से ऐसा लगता है कि, 'लेखक ने जादू की छडी छुआई है। यशपाल ने सहज,सरल

और सरस भाषा का प्रयोग कर उपन्यास की मौलिकता बढायी है।

यशपाल की मनोवृत्ति यथार्थवादी है। यथार्थ को नग्न रूप में प्रस्तुत करने की सामर्थ्य यशपाल की लेखनी में है। मार्क्सवादी दर्शन यशपाल की जीवन दृष्टि का महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने मार्क्सवाद के आर्थिक पक्ष को ही नहीं, उसके राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण को भी अपनाया है।

सामाजिक अथवा राजनीतिक विचाराभिव्यक्ति करना यशपाल के उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य है।

यशपाल का प्रमुख उद्देश्य वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालते हुये मनुष्य निर्मित मान्यताओं और संस्थाओं पर तीक्ष्ण कुठराघात करना है। यशपाल का साहित्य हिन्दी साहित्य भण्डार की एक बहुमूल्य निधि है। यशपाल प्रगतिवादी लेखक है अर्थात् उनके जीवन दर्शन के निर्माण में मार्क्सवादी दृष्टि का प्रभाव है। प्रगतिवाद का मूलाधार धार्मिक भौतिकवाद है।

इस प्रकार अन्ततः यही कहा जायेगा कि यशपाल साहित्य क्षेत्र के अध्येत्ता और गहरे चिंतक थे।

'मनुष्य के रूप' एक घटना प्रधान उपन्यास है। मनुष्य परिस्थितियों से प्रताडित हो कितनेही रूप धारण करता है। यशपाल जी का यह उद्देश्य रहा है कि, सामाजिक संकीर्णता के जाल में से व्यक्ति को निकाल कर, विचार और तर्क के ठोस धरातल पर खडा कर वह उसे आत्म-विकास करने तथा आत्म-निर्भर रहने के लिए ऐसी विकासोन्मुख गति की ओर बढने के लिए प्रोत्साहित करता है। उनकी यथार्थवादी दृष्टि और क्रांतिकारी विचारधारा इस बातकी परिचायक है।

उपसंहार में हिन्दी साहित्य में यशपाल का स्थान निर्धारित करते हुए साहित्य को उनकी देन का मूल्यांकन किया गया है।

# परिशिष्ट ।

## संदर्भ ग्रंथ सूची ।

# परिशिष्ट

## यशपाल की उपन्यास साहित्य सेवा

| अ.क्र. | नाम | प्रकाशन |
|---|---|---|
| १ | दादा कामरेड | १९४२ |
| २ | देशद्रोही | १९४३ |
| ३ | दिव्या | १९४५ |
| ४ | पार्टी कामरेड | १९४६ |
| ५ | मनुष्य के रूप | १९४९ |
| ६ | अमिता | १९५६ |
| ७ | झूठा सच ( वतन और देश ) | १९५८ |
| ८ | झूठा सच ( देश का भविष्य) | १९६० |
| ९ | बारह घण्टे | १९६२ |
| १० | अप्सरा का शाप | १९६५ |
| ११ | क्यों फँसे ? | १९६८ |
| १२ | मेरी तेरी उसकी बात | १९७४ |
| | अनूदित उपन्यास | |
| १ | पक्का कदम | १९४९ |
| २ | जनानी ज्योडी | १९५५ |
| ३ | फसल | १९५६ |
| ४ | जुलैखाँ | १९६७ |

## संदर्भ ग्रंथ सूची


| क्र. | लेखक | ग्रंथ नाम | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| १ | गुप्त मैथिलीशरण | यशोधरा | साहित्य सदन, चिरगाँव, (झाँसी) २०२५. |
| २ | गुप्त(डॉ.)सरोज | यशपाल: व्यक्तित्व और कृतित्व | अनुराग प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७० । |
| ३ | गुप्त(डॉ)शक्तिस्वरूप | यशपाल और उनकी दिव्या | अशोक प्रकाशन, नवीन संस्करण १९९३ । |
| ४ | गुप्ता(डॉ)चमनलाल | यशपाल के उपन्यास सामाजिक कथ्य | शारदा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८६ । |
| ५ | जाधव(प्रा)विजय | यशपाल के उपन्यासोंके क्रांतिकारी पात्र | हिंदी विभाग, सांगोल महा., सांगोला । |
| ६ | जैन(डॉ) मधु | यशपाल के उपन्यासोंका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण | अभिलाषा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७७ । |
| ७ | कांत वा.रा. | यशपाल: माणसाची रूपं | नॅशनल बुक ट्रस्ट इंडिया १९७५ |
| ८ | लवटे(डॉ.)सुनीलकुमार | यशपाल: व्यक्तित्व और कृतित्व | शिवाजी विश्वविद्यालय जनवरी, १९८१ । |
| ९ | लवटे(डॉ)सुनीलकुमार | यशपाल का समग्र मूल्यांकन | पराग प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८४ । |
| १० | मल्होत्रा(डॉ)सुदर्शन | यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन | आदर्श साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७३ । |

| क्र. | लेखक | ग्रंथ नाम | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| ११ | मिश्र(डॉ.)पारसनाथ | मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल | लोकभारती प्रकाशन, प्रथम स्मरण,१९७२ । |
| १२ | नायक(प्रा.)प्रवीण | यशपाल का औपन्यासिक शिल्प | जैसवाल प्रतापचन्द प्रथम संस्करण,१९६३ । |
| १३ | साने(डॉ)ह.श्री. | यशपाल के उपन्यासों में सामयिक चेतना | सरस्वती प्रकाशन, कानपुर ,प्रथम संस्करण १९८८ । |
| १४ | शेन्डे(प्रा.) | यशपाल की कहानियों में नारी समस्या | शिवाजी विश्वविद्यालय जानेवारी,१९८९ । |
| १५ | सूरी(डॉ.)योगेश | यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ | चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर,प्रथम संस्करण, १९९४ । |
| १६ | तिवारी सुरेशचंद्र | यशपाल और हिंदी कथा साहित्य | अशोक प्रकाशन,दिल्ली, प्रयुक्त संस्करण, १९७३ । |
| १७ | वेंकटेश्वरराव (डॉ) सीलम् | यशपाल के उपन्यास समस्यामूलक अध्ययन | सीलम् प्रकाशन,मार्च, १९८३ । |
| १८ | यशपाल | मनुष्य के रूप | राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण,१९७७ । |
| १९ | यशपाल | दिव्या | राधाकृष्ण प्रकाशन, अष्टम संस्करण, १९६३ । |

| क्र. | लेखक | ग्रंथ नाम | प्रकाशन |
|---|---|---|---|
| २० | यशपाल | दादा कामरेड | राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९६३ । |
| २१ | यशपाल | सिंहावलोकन भाग-१ | लोक भारती प्रकाशन, पांचवी संस्करण, १९७२ । |
| २२ | यशपाल | सिंहावलोकन भाग-२ | |